जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान टिहरी गढ़वाल, नई टिहरी

भारत छोडो आन्दोलन दिवस (8 अगस्त 2024)का आयोजन

Theme

Echoes of Freedom: The Quit India Movement

कार्यक्रम आख्या

दिनांक 8 अगस्त 2024

कार्यक्रम समन्वयक : डा॰ सुमन नेगी

सह समन्वयक : डा॰ कपिल देव सेमवाल

प्रवक्ता, सेवापूर्व विभाग, डायट, नई टिहरी

भारत छोडो आन्दोलन दिवस (8 अगस्त 2024) का आयोजन

Theme-Echoes of Freedom: The Quit India Movement

कार्यक्रम आख्या

दिनाँक 8 अगस्त 2024 को डायट टिहरी में भारत छोड़ो आन्दोलन दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ श्रीमती हेमलता भट्ट, प्राचार्य डायट टिहरी द्वारा किया गया। यह दिवस भारत के स्वतंत्रता संग्राम के बेहद महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक अध्यायों में से एक है। इस कार्यक्रम का आयोजन विद्याालयी शिक्षा उत्तराखण्ड के निर्देशन के क्रम में इतिहास के इस गौरवशाली पृष्ठ को स्मरण करने के लिए मनाया गया है।

कार्यक्रम का आरम्भ डी॰एल॰एड॰ प्रशिक्षु द्वितीय सेमेस्टर मनीषा गंगवाल के भाषण द्वारा हुआ। तत्पश्चात डी॰एल॰एड॰ प्रशिक्षुओं द्वारा लघु नाटिका के माध्यम से भारत छोड़ो आन्दोलन के इतिहास एवं प्रमुख घटनाओं का मंचन किया गया। नाटक के द्वारा यह जानकारी प्रदान की गई कि 82 वर्ष पहले आज ही के दिन 8 अगस्त 1942 को भारत छोड़ो आन्दोलन की चिंगारी पूरे देश में फैली थी। क्रिप्स मिशन की विफलता के बाद गाँधी जी ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ अपना तीसरा सबसे बड़ा आन्दोलन छेड़ने का फैसला लिया। 8 अगस्त 1942 में शुरू हुए इस ऐतिहासिक आन्दोलन को **अंग्रेजों भारत छोड़ो** का नाम दिया गया। भारत छोड़ो आन्दोलन को **अगस्त क्रांति आन्दोलन** के रूप में भी जाना जाता है। इस दिन महात्मा गाँधी ने अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक में **भारत छोड़ो** का नारा दिया। इसी दिन उन्होंने **करो या मरो** का भी आह्वान किया। गाँधी जी का यह आह्वान भारतीय जनमानस को जागृत करने वाला था। इस आन्दोलन की पृष्ठभूमि में कई महत्वपूर्ण घटनाएं घटित हुई थी। 1939 में द्वितीय विश्व युद्ध की शुरूआत के बाद ब्रिटिश सरकार ने भारतीय नेताओं से बिना परामर्श किए भारत को युद्ध में शामिल कर लिया था। इससे भारतीय नेताओं और जनता में भारी असंतोष फैल गया। 1942 तक आते–आते यह असंतोष

अपनी चरण पर पहुंच गया। गाँधी जी और अन्य नेताओं ने यह महसूस किया कि अब समय आ गया है कि जब ब्रिटिश शासन को भारत से हटाना ही एक मात्र विकल्प है।

भारत छोड़ो आन्दोलन का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह था कि यह पूरे देश में फैल गया। इसमें किसान, मजदूर, छात्र, महिलाएं और यहां तक कि बच्चे भी शामिल हुए। हर वर्ग और हर उम्र के लोगों ने इस आन्दोलन में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। इस आन्दोलन ने भारतीय समाज को एकजुट कर दिया और स्वतंत्रता की ललक को और प्रबल कर दिया। हमारे महान नेताओं जैसे जवाहर लाल नेहरू, सरदार बल्लभ भाई पटेल, मौलाना अबुल कलाम आजाद और अनेकों अनाम नायकों ने भी इस आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। आन्दोलन के दौरान कई नेता जेल गए। लेकिन उनकी आवाज बन्द नहीं हुई। हर तरफ से अंग्रेजों भारत छोड़ो का नारा गूंज रहा था। भारत छोड़ो आन्दोलन ने हमे यह सिखाया कि सच्ची स्वतंत्रता के लिए संघर्ष और बलिदान आवश्यक है। गाँधी जी के नेतृत्व में इस आन्दोलन ने हमे यह सिखाया कि जब पूरा देश एकजुट होकर अपने लक्ष्य के लिए खड़ा होता है तो उसे कोई भी ताकत रोक नहीं सकती है। इस ऐतिहासिक आन्दोलन की प्रेरणा हमें आज भी मार्गदर्शन देती है। हमारे देश के विकास और समृद्धि के लिए हमें इसी एकता, संकल्प और साहस की आवश्यकता है। हमें अपने देश के लिए वैसी ही निष्ठा और समर्पण दिखाने की आवश्कता है जैसी हमारे स्वतंत्रता सैनानियों ने दिखाई थी। जैसा कि गाँधी जी ने कहा था, **"आप जो भी करेंगें वह नगण्य होगा लेकिन यह बहुत महत्वपूर्ण है कि आप उसे करें।"** इस घटना तथा आन्दोलन से हमें यह अवश्य सीखना चाहिए कि अगस्त क्रांति जैसी अनेक प्रतिक्रियाओं के फलस्वरूप अंग्रेजो ने भारत छोड़ा। यदि हम एकत्रित होकर प्रयास नहीं करते तो आज

भी गुलाम ही रहते। अतः अपने देश को सर्वोच्च मानते हुए हमें देश का सम्मान बचाने हेतु हमेशा तैयार रहना चाहिए।

कार्यक्रम के अंत में संस्थान की प्राचार्य श्रीमती हेमलता भट्ट द्वारा प्रशिक्षुओं एवं प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए कहा गया कि हमारे देश के स्वतंत्रता सेनानियों ने अनेकों कष्ट सहन कर देश को आजादी प्रदान करने में अपना सहयोग दिया। उनके संघर्ष से हमें यह सीख लेनी चाहिए की अपने कार्यों को ईमानदारी से पूर्ण कर हम भी देश सेवा में अपना योगदान दे सकते हैं। गाँधी जी के संदर्भ में एक छोटी घटना के माध्यम से उन्होंने प्रशिक्षुओं एवं शिक्षकों को प्रेरित किया कि हमें अपने विद्यार्थियों को इस प्रकार शिक्षा प्रदान करनी चाहिए जिससे उनमें देशभक्ति एवं देश सेवा की भावना का संचार हो।

कार्यक्रम का संचालन डी॰एल॰एड॰ प्रशिक्षु सौरभ ममगांई द्वारा किया गया। लघु नाटिका में गाँधी जी भूमिका प्रशिक्षु आशीष रतूड़ी द्वारा, जवाहर लाल नेहरू की भूमिका प्रशिक्षु नवीन सिंह चौहान द्वारा, सुचित्रा कृपलानी की भूमिका प्रशिक्षु तनू वर्मा, सरदार बल्लभ भाई पटेल की भूमिका प्रशिक्षु मोहित राणा द्वारा, मिस्टर क्रिप्स की भूमिका प्रशिक्षु अंकित कृथ्वाल द्वारा निभाई गयी। प्रशिक्षु अंकित सिंह पंवार, पारस सैनी, अर्जुन सिंह, कपिल रावत, प्रवीण कुमार, प्रियंका, शिलाखा कैंतुरा, रजत खनेड़ी, सरोज कुमार, मनीषा नेगी, जतिन विष्ट, विकास, द्वारा भी लघु नाटिका में महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाई गयी। इस अवसर पर कार्यक्रम की समन्वयक डॉ॰ सुमन नेगी, डॉ॰ कपिल देव सेमवाल तथा श्री दीपक रतूड़ी प्रवक्ता डायट टिहरी एवं एफ॰एल॰एन॰ समीक्षा बैठक में प्रतिभाग करने हेतु विभिन्न विकासखण्डों के विद्यालयों से आए हुए शिक्षक उपस्थित थे।

(हेमलता भट्ट)
प्राचार्य
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
टिहरी गढ़वाल, नई टिहरी